सहायता-प्राप्त आवास में आध्यात्मिक जीवन

माहीं पूरयाग्मा

लोग सामान्यतः यह सोचते हैं कि हम वयोवृद्ध लोगों में ज्यादा बदलाव नहीं आता, लेकिन मुझे इस बात का एहसास होता है कि मैं काफी बदल चुकी हूं ,खास तौर पर इस सहायता-प्राप्त आवासीय केंद्र में ,जहां मैं पिछले साल रहने आई थी।

हां, सही है कि पुराने कुत्ते भी नई तरकीबें सीख सकते हैं!

जब मैं बड़ी हो रही थी तो काफी शर्मीली थी, और इसलिए एक अंतर्मुखी बच्ची के रूप में मुझे ठीक से समझा नहीं जा सका। कुछ हद तक मैं अभी भी अंतर्मुखी हूं लेकिन एक चिकित्सक के रूप में काम करने के वर्षों में, और बहाई समुदाय की गतिविधियों के कारण ,मेरा शर्मीलापन धीरे-धीरे गायब हो गया।

इसी तरह ,वृद्ध होने और सहायता-प्राप्त आवास में जाने के बारे में भी मेरा डर अब गायब हो गया है।

जब से मैं इस जगह पर आई हूं, और मेरे वे डर समाप्त हो चुके हैं, मैं हर किसी के साथ व्यक्तिगत और स्नेह भरा सम्बंध बनाने के लिए प्रेरित होती हूं। हर दिन और रात ,जब मैं अपनी सैर पर जाती हूं, तो मैं साथ रहने वाले अन्य निवासियों और सभी देखभालकर्ताओं से भी जुड़ने का प्रयास करती हूं। वे अब मेरे परिवार बन चुके हैं ,मैं उन सबसे प्यार करती हूं और उन सबका प्यार महसूस भी करती हूं। मैं पीछे मुड़कर अपनी शर्मीली, सबसे खिंची रहने वाली किशोरावस्था पर नजर डालती हूं और महसूस करती हूं कि मेरे इस नाशवान शरीर के भीतर रहने वाला आंतरिक व्यक्ति निर्णायक रूप से बदल चुका है।

मैं सोचती हूं -वह व्यक्ति कौन था ?मैं अब जिस व्यक्ति के रूप में हूं, वह मुझे पहले से कहीं ज़्यादा पसंद है ,और मैं अपनी उम्र बढ़ने और इस कैंसर के लिए ईश्वर को धन्यवाद देती हूं जिसने मुझे अपने जीवन के इस मुकाम पर पहुंचाया। यह सुनने में अजीब लग सकता है ,लेकिन यह सच है। ईश्वरीय संदेशवाहक और बहाई धर्म प्रवर्तक बहाउल्लाह ने लिखा है:

मेरी ओर से दी जाने वाली विपत्ति मेरी अनुकंपा है। बाह्य रूप से यह अग्नि और प्रतिशोध है किंतु आंतरिक रूप से यह प्रकाश और दया है। शीघ्रता कर और उसे गले लगा ले ताकि तू प्रकाश का अनंत पुंज तथा एक अमर आत्मा बन सके। यह तेरे लिए मेरी आज्ञा है, इसका पालन कर।

अब मैं इस कथन की सत्यता को कितनी अच्छी तरह समझ सकती हूं, और यह मुझे कितना सुकून देता है ! जितना अधिक मैं इस पर अमल करती हूं, सृष्टिकर्ता से उतनी ही निकटता महसूस करती हूं, और उतनी ही अधिक आंतरिक शांति का अनुभव करती हूं।

मैं अब हर चीज के लिए आभारी हूं –मेरा यह छोटा-सा कमरा ,मेरे दोस्त ,यहां तक कि मेरी बीमा कंपनी भी। मैंने पिछले 21सालों से दीर्घकालिक देखभाल बीमा के लिए भुगतान किया है -लेकिन सहायता-प्राप्त आवास में जाने के बाद कई महीनों तक ,मैंने उस बीमा के लाभ प्राप्त करने के लिए पात्रता प्राप्त करने की कोशिश की है। मुझे बताया गया कि मैं "उनके मानदंडों में फिट नहीं बैठती", इसलिए मुझे वे लाभ नहीं मिल पाए ,हालांकि मुझे स्टेज 4कैंसर है और मैं दीर्घकालिक देखभाल में हूं!

मेरी सबसे अच्छी दोस्त ऐनी ,मेरी परी ,मेरी उम्मीदों को जगाए रखने की कोशिश करते हुए अथक परिश्रम करती रही। मैं ,जो इस बारे में नकारात्मक सोचती रहती थी कि मुझे क्या मिलेगा या क्या नहीं ,एक समय सारी उम्मीदें खो बैठी। मुझे इस बात से तसल्ली मिली कि कम से कम कुछ समय के लिए मैं सहायता-प्राप्त आवास केंद्र में रह सकती हूं, क्योंकि मैंने इसका खर्च वहन करने के लिए अपना घर और अपनी कार बेच दी थी।

लेकिन कुछ हफ़्ते पहले ,ऐनी ने मुझे फ़ोन किया और कहा कि हमें उस बीमा कंपनी से एक पत्र मिला है। मुझे विनम्र बने रहने और चुप रहने के लिए सचमुच स्वयं पर नियंत्रण रखना पड़ा, जबकि मन ही मन मैं उस पर चिल्ला रही थी, यह कहते हुए कि "क्या फायदा है ,मुझे पता है कि उस पत्र में क्या लिखा है: 'प्रिय माहीं, हमें ख़ेद है कि ...'"

लेकिन ऐनी ने मेरी अधीरता को भांप लिया ,उसने पढ़ना शुरू किया ,और कितनी आश्चर्यजनक बात – पत्र में कहा गया था कि मुझे मंजूरी दे दी गई है। मैं ईश्वर की अत्यंत आभारी हूं। मैं अपने तीन चिकित्सा विशेषज्ञों और सहायता-प्राप्त आवासीय केंद्र के प्रति भी आभारी हूं जिन्होंने इस बीमा कंपनी को मेरे सम्पूर्ण और उपयोगी रिकॉर्ड भेजने में मदद की जिनके कारण शुरू में उनके द्वारा की गई इन्कार स्वीकृति में बदल गई।

ये सभी कृपाएं मुझसे क्या कहती हैं? वे एक बार फिर मुझे यही बताती हैं कि जब मैं अपने सारे काम ईश्वर के हाथों में सौंप देती हूं तो वह अपने समय और अपने तरीके से सब ठीक कर देगा –बशर्ते कि क्या और कैसे होना चाहिए इस बारे में मैं अपना अहंकार, अपनी धारणाएं छोड़ दूं। जब मैं अब्दुल-बहा को समर्पित यह प्रार्थना करती हूं तो यह मुझे सुकून और आश्वासन प्रदान करती है:

हे परमेश्वर! मेरी आत्मा में नवस्फूर्ति और उल्लास का संचार कर, मेरे हृदय को निर्मल कर दे, मेरी शक्तियों को प्रदीप्त कर दे। मैं अपने सारे कार्यकलाप तेरे हाथों में सौंपता हूं, तू ही मेरा पथ-प्रदर्शक, तू ही मेरा आश्रयदाता है। अब मैं और अधिक दुखी और शोकाकुल नहीं रहूंगा। अब मैं एक प्रसन्न और आनंदमय व्यक्ति बनूंगा। हे परमेश्वर! अब मैं चिंतातुर नहीं रहूंगा, न ही मैं स्वयं को कष्टों से व्यथित होने दूंगा। मैं जीवन की अप्रिय वस्तुओं में मन नहीं लगाऊंगा।

हे परमेश्वर! तू मेरा मुझसे भी कहीं अधिक बढ़कर सखा है। मैं स्वयं को तेरे प्रति समर्पित करता हूं, हे नाथ!